ई-कंटेंट -निर्मात्री सपना साहू

पाठ का शीर्षक-

गद्य साहित्य का विकास

पाठ्यक्रम-

कक्षा: बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

विषय:- संस्कृत

पेपर कोड: -A020201T

अधिगम उद्देश्य-

इस पाठ के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. संस्कृत गद्य साहित्य के विकासक्रम को समझ सकेंगे।

2. गद्य साहित्य के विभिन्न कालों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

3. संस्कृत के प्रमुख गद्यकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

4. संस्कृत गद्य साहित्य के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में पद्य और गद्य दोनों का समान रूप से महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि संस्कृत साहित्य में पद्य की प्रधानता रही है, तथापि गद्य साहित्य का विकास भी अत्यन्त समृद्ध एवं प्रभावशाली रहा है। संस्कृत गद्य भारतीय संस्कृति, दर्शन, इतिहास तथा सामाजिक जीवन का दर्पण है। इसकी भाषा परिष्कृत, भावपूर्ण एवं साहित्यिक सौन्दर्य से युक्त है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत गद्य निरन्तर विकसित होता रहा है और आज भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

गद्य साहित्य का विकास

1. **वैदिक काल**

संस्कृत गद्य का प्रारम्भ वैदिक साहित्य से माना जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में गद्य का व्यवस्थित स्वरूप प्राप्त होता है। इस काल का गद्य सरल, स्वाभाविक तथा धार्मिक विषयों पर आधारित है।

2. आरण्यक एवं उपनिषद् काल

इस काल में गद्य का स्वरूप दार्शनिक एवं चिंतनप्रधान हो गया। उपनिषदों में संवादात्मक शैली का विकास हुआ तथा आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों का विवेचन गद्य के माध्यम से किया गया।

3. सूत्रकाल

सूत्रकाल में गद्य अत्यन्त संक्षिप्त, सारगर्भित एवं व्यवस्थित रूप में विकसित हुआ। इस काल में कम शब्दों में अधिक अर्थ व्यक्त करने की शैली का विकास हुआ।

4. शास्त्रीय काल

शास्त्रीय काल संस्कृत गद्य का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में स्वतंत्र गद्यकाव्यों की रचना हुई। बाणभट्ट, दण्डी तथा सुबन्धु जैसे महान गद्यकारों ने संस्कृत गद्य को साहित्यिक उत्कर्ष प्रदान किया।

5. मध्यकाल

मध्यकाल में गद्य का प्रयोग धार्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं टीका साहित्य में व्यापक रूप से हुआ। इस काल में विद्वत्ता तथा शास्त्रीय परम्परा का विशेष विकास हुआ।

6. आधुनिक काल

आधुनिक संस्कृत गद्य अधिक सरल, सुबोध तथा व्यवहारोपयोगी हो गया। निबन्ध, कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता तथा वैज्ञानिक विषयों पर भी संस्कृत गद्य की रचना होने लगी।

संस्कृत गद्य साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

- सरल से जटिल शैली तक क्रमिक विकास।
- समास-बहुल एवं परिष्कृत भाषा।
- अलंकारों का संतुलित प्रयोग।
- वर्णनात्मक एवं भावप्रधान शैली।
- दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विषयों की प्रधानता।
- भाषा का व्याकरणिक एवं साहित्यिक परिष्कार।

संस्कृत गद्य साहित्य का महत्व

संस्कृत गद्य साहित्य भारतीय संस्कृति, दर्शन, इतिहास तथा ज्ञान-परम्परा का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके माध्यम से भारतीय जीवन-मूल्यों, सांस्कृतिक परम्पराओं तथा दार्शनिक विचारों का संरक्षण हुआ है। यह भाषा की अभिव्यक्ति-शक्ति तथा साहित्यिक सौन्दर्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सारांश

संस्कृत गद्य साहित्य का विकास वैदिक काल से प्रारम्भ होकर आधुनिक युग तक निरन्तर होता रहा है। प्रत्येक युग में इसकी भाषा, शैली एवं विषय-वस्तु में परिवर्तन और परिष्कार हुआ। इस विकास-यात्रा ने संस्कृत गद्य साहित्य को भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर बना दिया है।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संस्कृत गद्य साहित्य का प्रारम्भ किस काल से माना जाता है?

2. सूत्रकालीन गद्य की दो विशेषताएँ लिखिए।

3. शास्त्रीय काल के प्रमुख गद्यकारों के नाम लिखिए।

4. आधुनिक संस्कृत गद्य की दो विशेषताएँ लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संस्कृत गद्य साहित्य के विकास का क्रमबद्ध वर्णन कीजिए।

2. संस्कृत गद्य साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

3. शास्त्रीय काल में संस्कृत गद्य साहित्य के विकास का मूल्यांकन कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. संस्कृत गद्य साहित्य का प्रारम्भ किस काल से माना जाता है?

   (क) गुप्तकाल (ख) वैदिक काल (ग) मध्यकाल (घ) आधुनिक काल

   उत्तर: (ख)

2. सूत्रकालीन गद्य की प्रमुख विशेषता क्या है?

   (क) अलंकारिकता (ख) संक्षिप्तता (ग) छन्दबद्धता (घ) कल्पनाशीलता

उत्तर: (ख)

3. संस्कृत गद्य का स्वर्णयुग किसे कहा जाता है?

(क) वैदिक काल (ख) शास्त्रीय काल (ग) आधुनिक काल (घ) मध्यकाल

उत्तर: (ख)

4. बाणभट्ट किस विधा के प्रमुख साहित्यकार हैं?

(क) नाटक (ख) गद्य (ग) महाकाव्य (घ) व्याकरण

उत्तर: (ख)

5. दण्डी की प्रसिद्ध गद्य रचना कौन-सी है?

(क) कादम्बरी (ख) दशकुमारचरित (ग) रघुवंश (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

उत्तर: (ख)

6. आधुनिक संस्कृत गद्य की प्रमुख विशेषता क्या है?

(क) केवल धार्मिक विषय (ख) सरल एवं व्यवहारोपयोगी शैली (ग) केवल समासयुक्त भाषा (घ) केवल पद्य शैली

उत्तर: (ख)

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. बलदेव उपाध्याय – संस्कृत साहित्य का इतिहास।

2. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी – संस्कृत साहित्य का इतिहास।

3. ए. बी. कीथ – A History of Sanskrit Literature।

4. वाचस्पति गैरोला – संस्कृत साहित्य का इतिहास।